वास्तव में इस दुनिया में खुशी सिर्फ महसूस करना है। यह खुशी चेतन या लाइव नहीं है। मतलब ये कि खुशी का कोई रूप नही होता।

किसी माँ की बच्चे के जन्म लेने के बाद की खुशी तथा गर्भावस्था की खुशी में बहुत अंतर होता है।

बच्चा जब हो जाता है तो माँ इंद्रियों के माध्यम से भी सुख प्राप्त कर सकती है। वो अपने बच्चे को देखकर खुश होती है, बच्चे को गले लगाने में बेहद आनंद मेहसूस करती है, उसे बच्चे के साथ खेलने में मजा आता है, वह उसके साथ एकतरफा बात करने में खुशी पाती है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

बच्चा वही है जो गर्भ में था, लेकिन खुशी के नए आयाम हैं और हर आयाम खुशी से भरा है।

इस खुशीसे सगुण साकार भगवान से संबंधित खुशी का अंदाजा लगाया जा सकता है।

यदि कोई माँ से पूछता है, 'देखो! बच्चा गर्भ में था तब आप खुश थी। आइए हम फिर से बच्चे को गर्भ में डालते है ताकि आप बच्चे से संबंधित काम करने से मुक्त हो जाएँ। ' माँ नहीं मानेगी। क्यों? गर्भ की तुलना में अब बच्चे का रूप है इसलिए बच्चा अधिक सुखद होता है।

जब आप अपने प्रियजन को लेने के लिए हवाई अड्डे पर प्रतीक्षा करते हैं तो आकाश में विमान देखते हैं तो आप खुश होते हैं। जब आप अपने प्रियजन को नीचे उतरते हुए देखते हैं तो आप अधिक खुश होते हैं। जब आप

उसे अधिक स्पष्ट रूप से देखते हैं तो खुशी बढ़ती है और जब आप उसे गले लगाते हैं तो सबसे अधिक खुशी महसूस करते है।

इसी प्रकार निराकार ईश्वर के आनंद तुलना में साकार भगवान का आनंद कई गुणा अधिक है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132